प्राचार्य का संदेश

शिक्षा एवं विकास की दृष्टि से पिछड़े टोंक जिले में महिलाओं की उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1995 में राज्य सरकार द्वारा की गयी थी। स्नातक स्तर पर कला संकाय में 6 विषयों तथा वाणिज्य संकाय में 3 विषयों के साथ अपनी विकास यात्रा आरंभ कर यह महाविद्यालय निरन्तर अपने अकादमिक एवं भौतिक उन्नयन हेतु प्रयासरत है। सत्र् 2022–23 में इतिहास विषय में स्नातकोत्तर संकाय, स्नातक स्तर पर विज्ञान संकाय तथा कला संकाय में सात नये विषयों की स्वीकृति के पश्चात हमारी यह यात्रा पूर्वापेक्षा अधिक सुगम और सार्थक हो सकेगी, ऐसी आशा है।

वर्तमान युग महिला सशक्तीकरण का युग है। हमारा देश आजादी के अमृत काल में जी रहा है। राजनीति, विज्ञान, अर्थतंत्र, सामाजिक न्याय एवं सुरक्षा, चिकित्सा, तकनीक, उद्योग, संचार क्रांति सभी क्षैत्रों में स्त्री शक्ति आधार शिला बनकर उभरी है। यह समस्त उपलब्धियाँ एवं गौरव शिक्षा के बिना हासिल नहीं किये जा सकते, इसमें कोई संशय नहीं है। वे छात्राऐं सौभाग्यशाली हैं जिन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर मिला है। यह महाविद्यालय टोंक तहसील का एक मात्र राजकीय कन्या महाविद्यालय है। यहाँ कला, वाणिज्य एवं विज्ञान तीनों संकायों में अध्ययन–अध्यापन की सुविधा उपलब्ध है। छात्राओं के लिये गृह विज्ञान एवं चित्रकला जैसे विषय उपलब्ध हैं, जिसमें शिक्षण प्राप्त कर छात्राऐं अपने रचनात्मक, कलात्मक एवं पारिवारिक जीवन को उत्कृष्ट बना सकती हैं, साथ ही इतिहास, राजनीतिशास्त्र, लोकप्रशासन एवं भूगोल जैसे विषयों के साथ अध्ययन कर प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकती हैं तथा रोजगार की दृष्टि से आत्मनिर्भर भी हो सकती हैं।

इस महाविद्यालय में अध्ययन हेतु आने वाली छात्राऐं सामान्यतः ग्रामीण परिवेश से, आर्थिक दृष्टि से कमजोर तथा अल्पसंख्यक वर्ग से आती हैं जिन्हें यह महाविद्यालय अपने कैरियर एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए मंच प्रदान करता है।

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद उच्च शिक्षा के परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन एवं नवाचार हो रहे हैं, नयी सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली व आंतरिक मूल्यांकन जैसे नये प्रयोग किये जा रहे हैं। शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों को ही इस संदर्भ में अद्यतन एवं हर चुनौती के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

महाविद्यालय की छात्राओं से मेरी यही अपील है कि वे नियमित अध्ययन, परिश्रम, अद्यतन जागरूकता के माध्यम से स्वयं को भविष्य की चुनौतियों के लिये तत्पर बनावें, अपने माता–पिता की गाढ़ी कमाई का उपयोग उनके सपनों को साकार करने में करें। महाविद्यालय में अनुशासित एवं मर्यादापूर्ण आचरण करें तथा छात्राओं हेतु बनाई गई आचार संहिता का पालन करें।

परिश्रम हर सफलता की अचूक कुंजी है। निरन्तर अभ्यास से पत्थर पर निशान पड़ सकता हैं तो मनुष्य की तो बात ही क्या, वह तो ईश्वर की सृष्टि का सबसे संवेदनशील एवं अनुपम उदाहरण हैं। अनथक परिश्रम, निरन्तर अभ्यास, निर्भय संघर्ष एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आप हर बड़ी से बड़ी जंग को जीत सकते हैं क्योंकि–

''लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।''

प्रो0 सुलोचना मीना
प्राचार्य